



# INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

## भारत में महिलायें

डॉ.राजेश कुमार कहार  
सहायक प्राध्यापक  
शासकीय महाविद्यालय चौरई  
जिला-छिंदवाड़ा म.प्र.

प्रस्तावना :-

भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई है। भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहे हैं। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार चढ़ाव आते रहें तथा उनके अधिकारों में तदनुरूप बदलाव भी होते रहे हैं। नारी समाज रूपि राष्ट्र की धूरी है जिसके चारां और मानव रूपि समाज का सम्पूर्ण ढाँचा घूमता है। नारी समाज का वह स्तंभ है जिसके बिना समाज का निर्माण नहीं हो सकता।

वैदिक काल में महिलायें :-

प्राचीन काल में नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान नारी के बिना अधूरा माना जाता था। नारी को घर की मुखिया के रूप में सम्पूर्ण समान जनक दृष्टि से देखा जाता था। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति समाज में काफी ऊंची थी और उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त थी। वे धार्मिक क्रियाओं में भाग ही नहीं लेती थी बल्कि क्रियाएं संपन्न कराने वाले पुरोहितों और ऋषियों का दर्जा भी उन्हें प्राप्त था। उस समय महिलायें धर्म शास्त्रार्थ इत्यादि में पुरुषों की तरह ही भाग लेती थी।

वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल में महिलाओं को गरिमामय स्थान प्राप्त था। उसे देवी, सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी, सहचरी माना जाता था। स्मृतिकाल में भी "यत्र नार्यस्ते पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता" कह कर सम्मानित स्थान प्रदान किया गया है। पौराणिक काल में शक्ति का स्वरूप मानकर उसकी अराधना की जाती रही है। वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था। उनको शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। सम्पत्ति में उनको बराबरी का हक था। सभा व समितियों में से स्वतंत्रापूर्वक भाग लेती थी।

मध्यकाल में महिलायें :-

समाज में महिलाओं की स्थिति में मध्ययुगीन काल के दौरान और अधिक गिरावट आयी जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक सामाजिक जिंदगी का हिस्सा बन गई थी किंतु 11 वी शताब्दी के बीच भारत में महिलाओं की स्थिति दयनीय होती गई। एक तरह से यह महिलाओं के सम्मान विकास और सशक्तिकरण का अंधकार युग था। भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलमानों को जीतने के साथ ही परदा प्रथा का भारतीय समाज में ला दिया राजस्थान के राजपूतों में जौहर की प्रथा थी।

मुगल शासन सामंती व्यवस्था केंद्रीय सत्ता का विनष्ट होना था विदेशी आक्रमण और शासकों की विलासितापूर्ण प्रवृत्ति ने महिलाओं को उपभोग की वस्तु बना दिया था और उसके कारण बाल विवाह परदा प्रथा अशिक्षा विभिन्न सामाजिक कुरीतियों का प्रवेश हुआ जिसने महिलाओं की स्थिति को हीन बना दिया तथा उनके निजी व सामाजिक जीवन का कलुषित कर दिया।

इन परिस्थितियों के बावजूद भी कुछ महिलाओं ने राजनीति साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में सफलता हासिल की। रजिया सुल्तान दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला सम्राज्ञी बनीं। गोंड की रानी दुर्गावती ने 1564 में मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया। चांद बीबी ने 1590 के दशक में अकबर की शक्तिशाली मुगल सेना के खिलाफ अहमदनगर की रक्षा की। जहाँगीर की पत्नि नूरजहाँ ने राजशाही शक्ति का प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया और मुगल राजगद्दी के पीछे वास्तविक शक्ति के रूप में पहचान हासिल की। मध्यकाल में विदेशियों के आगमन से स्त्रियों की स्थिति में जबर्दस्त गिरावट आयी। अशिक्षा और रूढ़ियाँ जकड़ती गई घर की चाहर दीवारी में कैद होती गई और नारी एक अबला, रमणी बनकर रह गई।

आधुनिक काल में महिलायें :-

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत के कुछ समाज सेवियों जैसे राजाराम मोहनराय दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर तथा केशवचंद्र सेन ने अत्याचारी सामाजिक व्यवस्था के

विरुद्ध आवाज उठायी। आर्य समाज आदि समाज सेवी संस्थाओं ने नारी शिक्षा आदि के लिए प्रयास आरंभ किये। इन्होंने तत्कालीन अंग्रेजी शासकों के समक्ष स्त्री पुरुष समानता स्त्री शिक्षा, सती प्रथा पर रोक की आवाज उठायी।

वस्तुतः इक्कीसवीं सदी महिला सदी है। वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया। इसमें महिलाओं की क्षमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा समग्र समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के संबंध में उन्हें जागरूक बनाने के प्रयास किये गए। महिला सशक्तिकरण हेतु वर्ष 2001 में प्रथम बार राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति बनाई गई जिससे देश में महिलाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान और समुचित विकास की आधारभूत विशेषताएँ निर्धारित किया जाना संभव हो सके। इसमें आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ समान आधार पर महिलाओं द्वारा समस्त मानवाधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रताओं का सैद्धांतिक तथा वस्तुतः उपभोग पर तथा इन क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी व निर्णय स्तर तक समान पहुँच पर बल दिया गया है।

उपसंहार :-

महिलाओं की स्थिति में सुधार ने देश के आर्थिक और सामाजिक सुधार के मायने भी बदल कर रख दिए हैं। दूसरे विकासशील देशों की तुलना में हमारे देश में महिलाओं की स्थिति काफी बेहतर है। यद्यपि हम यह तो नहीं कह सकते कि महिलाओं के हालात पूरी तरह बदल गए हैं पर पहले की तुलना में इस क्षेत्र में बहुत तरक्की हुई है। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति पहले से अधिक सचेत हैं महिलाएँ अब अपनी पेशेपर जिंदगी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक को लेकर बहुत अधिक जागरूक हैं जिससे वे अपने परिवार तथा रोजमर्रा की दिनचर्या से संबंधित खर्चों का निर्वाह आसानी से कर सकें।

## संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राजकुमार डा नारी के बदले आयाम अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2005
2. सिंह किरण बहादुर महिला अधिकार व सशक्तिकरण कुरुक्षेत्र मार्च, 2006
3. शैलजा नागेंद्र वोमेंस राइट्स एंडी वी पब्लिशर्स जयपुर, 2006
4. मिश्र उर्मिला प्रकाश प्राचीन भारत में नारी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 2012
5. गुप्ता गायत्री प्राचीन भारत में नारी की स्थिति, श्रीनिवास पब्लिकेशन, 2012
6. [www.theguardian.com.women](http://www.theguardian.com.women)
7. [www.women](http://www.women) Wikipedia

